अंक 35

वातें वाग्धारा नी

अप्रेल, 2023

VAAGDHARA

"पाणा नी उतावरे कपार नी फुड़ाय"
-(किसी काम में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए)

प्यारे- किसान भाई-बहनों,
प्यारे बच्चों, युवाओं व स्वराज साथियों
जय गुरु !!

जैसा कि इस माह में आप सभी पाठकों से वाते पत्रिका के माध्यम से रूबरू होने का अवसर मिल रहा है | हर बार की तरह, मेरे मन में यही आग्रह और प्रश्न होता है कि क्या हम इस पत्रिका में जो जानकारी व चर्चा लेकर आते हैं, हम उसको कितना निरंतर समुदाय व संगठन तक ले जा पाते हैं और किस प्रकार से हम हमारे जीवन में उतारते हैं| वह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पत्रिका में समय के अनुरूप चर्चाओ को आप तक पहुंचाना दिन प्रतिदिन के कामों में हम नियमित ध्यान रखने वाले विषयों को भूल जाते हैं उन्हें हमारी सोच व जीवन शैली में लाना, इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है| हर वो व्यक्ति जो समाज से जुड़ा हुआ है वह किस प्रकार से इस बदलाव के लिए प्रयोगशील बने, किस प्रकार से वह समाज को पुनःअपने प्रयासों के द्वारा लोटा सके| जैसेः- अनाज का एक दाना, कई दानों के रूप में लौटाता है| मवेशी घास खाता है तो गोबर के रूप में पुनः लौटाता है| एक पेड़ अगर जमीन से कुछ खाता है तो वह फल, पत्तियां, ऑक्सीजन के रूप में पुनःलोटाता है| इस प्रकार से हम प्रकृति के अंदर जी रहे हैं तो हम प्रकृति को बचाने के लिए इस प्रकृति को क्या लौटा रहे है| हमारे पूर्वजों ने हमें संस्कार दिए थे उन संस्कारों को आने वाली पीढ़ियों को कैसे दे पा रहे हैं और अगर हम समाज से अच्छे संस्कार लेते है तो, हम उन्हें कैसे सहेज कर आगे तक बढ़ा पाते हैं| यही चर्चा का मूल उद्देश्य रहा है|

पिछले 3 सालों में समय-समय पर आपसे कृषि, पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति के विभिन्न विषयों पर चर्चा करने का अवसर मिला, परंतु इन सब के मूल में एक बात स्थाई रही है हमारी संस्कृति और जीवन शैली जिसमें समाज को देने की आदत रही है| समाज से केवल मात्र लेने का नहीं बल्कि सुरक्षा व रक्षा की भी है, चाहे वह रक्षा प्रकृति, जीव-जंतुओं या इंसान की हो जिसे हमने हमारी स्वराज संदेश पद यात्रा के समय बहुत अच्छे से जिया और देखा भी है|

अतः मैं आप सभी पाठको से यह आग्रह करना चाहता हूं कि वाग्धारा केवल मात्र इन विषयों को सबके बीच चिंतन में लाने का एक प्रयास है| हमारी खेती जिसमें जल, जंगल, जमीन, जानवर और विरासत है| हमारे बच्चे जिनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और उनकी बाल सुरक्षा महत्वपूर्ण है और हमारी समाज में भागीदारी के साथ ही जिसमें पंचायत लोकतंत्र व संस्कृति में निहित है, उसे हम कितना निरंतर निभा पाते हैं यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है|

इसके अतिरिक्त सबसे संवेंदशील विषय के बारे में आप सभी से चर्चा करना चाह रहा हूं कि विगत कई दिनों से अखबारों में जब गेहूं निकालने की बात आती है तब से सुनते आ रहे हैं जैसा कि अभी बांसवाड़ा शहर के नजदीक एक बच्चा गेहूं की फुली डालते हुए थ्रेशर से कटकर मर गया जो कि बड़ा हृदय विदारक था| हमने हमारी आने वाली पीढ़ी को एक दिन की आजीविका या बहुत कम मजदूरी के लिए काल का ग्रास बना देते है, क्या यह उचित है? क्या हमारी संवेदनाऐ इतनी मरी हुई है? क्या हम हमारी आने वाली पीढ़ियों की इतनी भी सुरक्षा नहीं कर सकते हैं? यह हमारे लिए बड़ा सोचने का विषय है| हमारे क्षेत्र से समय-समय पर गड़रियो के साथ बच्चे चले जाते हैं, मध्यप्रदेश में सोयाबीन काटने, कभी गुजरात में कपास बीनने, तो कभी बिल्डिंगों के निर्माण के लिए श्रमिक के रूप में, क्या हम कभी इन मुद्दों को बदलेंगे? मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका को पढ़ने वाला कोई भी पाठक ऐसा नहीं होगा, जो अपने बच्चों को भेजता है परंतु हमारे बच्चे नहीं जा रहे है यह करके हम निश्चित नहीं हो सकते| हमारी जिम्मेदारी हमारे परिवार,फले,गांव, पंचायत को बाल श्रम मुक्त व बाल मित्र बनाने कि है जिसमें बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा सुनिश्चित हो सके|

मैं प्रत्येक पाठक, स्वराज मित्र, संगठन के साथियों से आग्रह कर रहा हूं कि आप वाग्धारा की चर्चा, और इसके प्रयासों के प्रमुख पुरोधा व कर्ताधर्ता है, अगर आप ही इन ज्वलंत विषयों को नहीं समझेंगे, चिंता नहीं करेंगे तो, हमारी बातें, बातें ही रह जाएगी और यह परिवर्तन साकार नहीं हो पाएगा, और अगर परिवर्तन साकार नहीं हुआ तो हमारे प्रयास समय के साथ धुंधले होते जाएंगे तो हमे कुछ समय बाद अपने आप पर पछतावा होगा| अतः मै आग्रह करना चाहता हूं कि हमारे स्वराज की परिकल्पना वाला गांव, समाज, संस्कृति बची हुई रहे उसके लिए हम स्वयं चिंतनशील रहे, प्रयास करते रहे, आप सबके प्रयासों की अपेक्षा में!

धन्यवाद

जय- हिंद, जय- स्वराज !!!

आपका अपना
जयेश जोशी

बीज एवं खेत की सुरक्षा

ग्रीष्म ऋतु अर्थात वैशाख-ज्येष्ठ में सूरज की तपन पूरे शबाब पर होती है। एक तरफ हम सब शादी-विवाह समारोह आयोजित करने और उसमे शिरकत करने में व्यस्त एवं मस्त रहते है तो दूसरी तरफ भयंकर गर्मी और गर्म हवाएं,आंधी-तूफान के अलावा पानी-बिजली की किल्लत से जन-जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। इस माह अधिकतम तापमान 30 एवं 40 डिग्री सेन्टीग्रेड के इर्द गिर्द होता है। वायु गति तेज यानी लगभग 11.2किमी प्रति घंटा होती है। तापमान में निरंतर वृद्धि, आद्रता में कमीं तथा तेज हवाएँ चलना इस माह की विशेषताएं हैं। तमाम कठिनाइयों के बावजूद कृषि में ग्रीष्म ऋतु का अपना महत्व है। वातावरण एवं धरती की तपन से कीट-रोग और खरपतवार नष्ट हो जाते है।अधिक गर्मी बेहतर मानसून का शुभ संकेत मानी जाती है। इस माह सभी किसान भाई तीन बातो को व्यवहार में लाने का संकल्प ले तो निश्चित ही कृषि को लाभप्रद बनाया जा सकता है।

इस माह के मूल मंत्र -

गर्मी की जुताई से सूर्य की तेज किरणें भूमि के अन्दर प्रवेश कर जाती है जिससे भूमिगत कीड़ों के अण्डे,इल्लियां व वयस्क कीट नष्ट हो जाते हैं। फसलों में लगने वाले उखटा,जड़ गलन आदि रोगों के रोगाणु व सब्जियों की जड़ों में गांठ बनाने वाले सूत्र कृमि भी नष्ट हो जाते हैं।घास,कांस,मोथा,गाजर घास आदि खरपतवारों में कमी आती है तथा खेत की मिट्टी में ढेले बन जाने से वर्षा जल सोखने की क्षमता बढ़ जाती है।

खाद्यान्न का सुरक्षित भंडारण :

अनाज का पर्याप्त और उचित भंडारण न होने के कारण नष्ट हो जाता है। अनाज भंडारण वाले कमरे/पात्र की साफ़-सफाई करें | धुप में सुखाये अनाज को छाया में ठंडा करके ही भंडारण करना चाहिए। भंडारण के समय अनाज वाली फसलों में 12, तिलहनी फसलों में 8, दलहनी फसलों में 9 और सोयाबीन आदि के दानों में 10 प्रतिशत से कम नमीं रहनी चाहिए।

फसल अवशेष न जलाये :

फसल कटाई उपरांत खेत में फसल अवशेष नरवाई जलाने से एक ओर पर्यावरण प्रदूषित होता है,वही दूसरी ओर मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है| मिट्टी में लाभदायक सुक्ष्मजीवी और बहुपयोगी केंचुआ भी नष्ट हो जाते है। फसल अवशेष में आग ना लगाये बल्कि इससे भूसा तैयार कर पशु आहार के रूप में प्रयोग करें। फसलों के ठूंठ आदि को खेत में हल चलाकर भूमि में ही मिला देने से ये खाद का काम करते है। फसल अवशेष से उम्दा किस्म की जैविक खाद/कम्पोस्ट भी तैयार किया जा सकता है।

इस माह खरीफ फसलों के लिए खेत तैयार करने और विभिन्न फसलों में लगने वाले आदान की व्यवस्था का समय है। इस माह फसलोत्पादन में संपन्न किये जाने वाले कृषि कार्यों की चर्चा प्रस्तुत है।

खरीफ में बोई जाने वाली फसलों की उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज एवं आवश्यकतानुसार गोबर खाद की व्यवस्था कर लेवें । खेतों में ग्रीष्म कालीन जुताई करें एवं गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट मिट्टी में अच्छी प्रकार से मिलाएं। धान की फसल में हरी खाद देना चाहते है तो खेत में हरी खाद वाली फसलों जैसे ढैंचा, सनई आदि की बुआई करने का यह उत्तम समय है।

- **गेहूं:** उपज को सुखाकर भंडारण की उचित व्यवस्था करें । आगामी वर्ष के लिये प्रयोग किये जाने वाले गेहूं बीज को सौर ताप विधि से उपचारित कर रखें।
- **जौ, चना व मसूर:** इन फसलों की गहाई न की गई हो तो जल्द कर उचित स्थान पर भंडारित कर लें ताकि वर्षा आदि से नुकसान न हो।
- **ग्रीष्म कालीन मूंग:** इन फसलों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। इन फसलों में सफेद मक्खी तथा फुदका कीट नियंत्रण हेतु दसपर्णी का छिड़काव करें। फलियों की तुड़ाई के बाद शेष फसल को खेत में पलट देने से यह हरी खाद का कार्य करती है।
- **चारा फसलें:** मक्का की बुवाई करें। पूर्व में लगाई गई लोबिया की 60-70 दिन की अवस्था में कटाई करें। आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सिंचित क्षेत्रों में खेत अथवा खेत की मेंड़ों पर घास लगाये।

सच्चा बचपन : बाल विवाह एक अभिशाप

वर्तमान में यह कानून बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के नाम से जाना जाता है ।

बालः– विवाह प्रतिषेध अधिनियम के अनुसाररू.

कोई बालिग बालक अगर नाबालिग बालिका से शादी कर लेता है तो उसे 2 लाख रूपये तक जुर्माना या 1 वर्ष कि सख्त सजा दि जा सकती है या दोनों दंड दिए जा सकते है।

बाल विवाह करने करवाने या शामिल होने पर गैर जमानती वारंट एवं सम्मन जारी होगा और कोई भी महिला इस क़ानून के द्वारा कैद की सजा से दण्डित नहीं की जा सकती है।

पंडितए बिचौलिए, अभिभावक, माता-पिता एवं संस्थागत सदस्य एवं अन्य कोई भी व्यक्ति जो बाल विवाह करवाता है या उसमें शामिल होता है तो इनके लिए इस अधिनियम के अंतर्गत 2 लाख रूपये तक जुर्माना या 1 वर्ष कि सख्त सजा दिये जाने का प्रावधान है

बाल विवाह किये जाने पर नाबालिग बच्चे के अभिभावकए संरक्षक विवाह को अमान्य या शून्य करने के लिए जिला न्यायालय में आवेदन कर सकते है। ऐसा आवेदन अभिभावकों के अलावा दोस्त भी कर सकते है। न्यायालय में विवाह को अमान्य करने के लिए विवाह के दिन से किसी भी समय तक लेकिन बालिग़ होने के 2 वर्ष तक आवेदन किया जाना आवश्यक होता है।

बालिका की मर्जी के खिलाफ बाल विवाह को अमान्य रद्द किया जा सकता है । न्यायालय द्वारा विवाह को रद्द करने के बाद बालिग होने पर दोनों शादी करने के लिए स्वतंत्र होते हैं ।

अगर शादी करने वाला पुरुष बालिग है तो बालिका की पुन शादी ना हो जाने तक भरण-पोषण का खर्च उठाएगा। अगर शादी करने वाला बालक नाबालिग है तो बालिका की पुनरू भरण-पोषण का खर्च बालक के अभिभावकों द्वारा उठाया जायेगा शादी ना होने तक ।

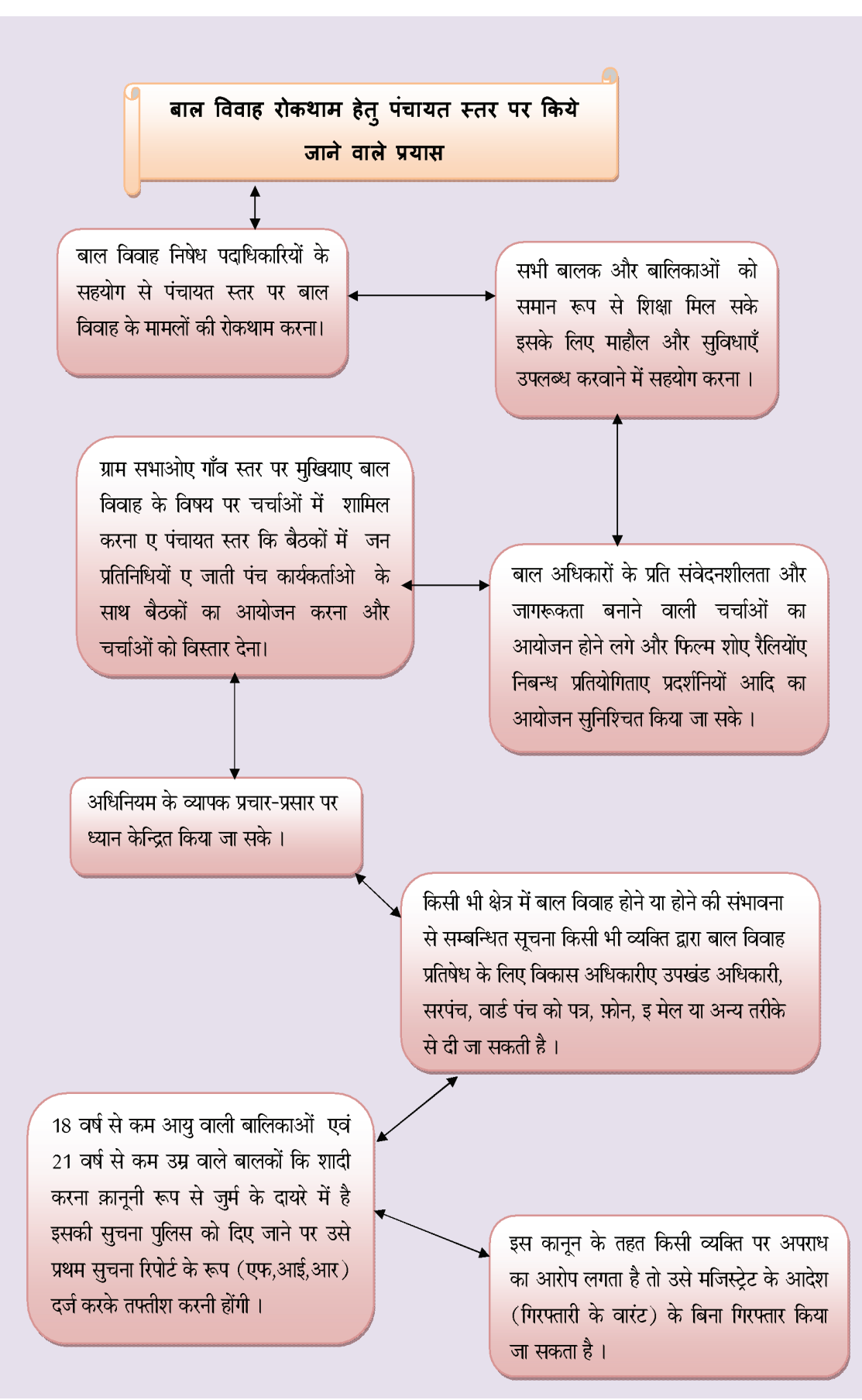

चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा ने दी कारागाह बंदियों को जानकारी

जिला जेल बांसवाड़ा में चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा के माध्यम से ओपन हाउस कार्यक्रम का आयोजन किया गया| कार्यक्रम की अध्यक्षता हेमंत सालवी ने की। चाइल्ड लाइन से शोभा सोनी, कमलेश बुनकर एवं बासुडा कटारा उपस्थित रहे | जिसमें सर्वप्रथम जेल में समस्त सुधार बंदी ग्रह साथियों का स्वागत व अभिनंदन किया गया । चाइल्ड लाइन से कमलेश बुनकर ने बताया कि हम लोग आपके बीच इसलिए आए हैं कि आपको किसी भी प्रकार की समस्या है तो हमें अवगत करवाएं हमारा यही मकसद है कि आप कि उचित समस्या को हम सरकार तक पहुंचाकर निदान करवाने का प्रयास करेंगे। कार्यक्रम में जेलर हेमंत सालवी ने बताया कि जीवन में अधिकांश ऐसे मौके आते हैं जिसमें हमारे से जाने-अनजाने में गलतियां हो जाती है। परंतु हमें जीवन में किंचित भी हार नहीं माननी है, गलतियों को सुधारने के लिए हमारे पास असीमित अवसर है उन्हें हमें अपनाना है और जीवन में यह सोचना है कि आखिर यह क्या हो गया? जो हो गया उसे भूल जाना है एवं आगे हमें क्या करना है । इसी कार्य में लग जाना है। आज आप हमारे सामने बैठे हो परंतु न आप अलग हो ना हम अलग, हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं । मैं आपके परिवार के सदस्य का मुखिया होने के नाते आप सबको कहना चाहता हूं कि आप अगर किसी प्रकार की इस जेल में समस्या है तो आप मुझे अवगत करवाएं हर संभव आपकी मदद के लिए तैयार हूं । आप विचार करते होंगे कि इनका हमारे जेल में क्या काम परंतु, यह हमारे बच्चों के बेहतर भविष्य के बारे में बताने के लिए आए कि हमारे यहां आज आने के पश्चात हमारे बच्चे किसी भी प्रकार से दुखी न रहे । इस संबंध में चर्चा कर आपके बालक- बालिकाओं की मदद करेंगे। टीम ने बताया कि जिसमें 0 से 18 वर्ष के बालक- बालिकाओं को किसी भी प्रकार की कोई समस्या है तो वह हमें अवगत कराएं। जाने अनजाने गलती की वजह से आप यहां पर हो परंतु आप हमें आपसे अलग नहीं समझे। हम आपकी समस्याएं एवं आपकी जो भी परेशानियां हैं उनको दूर करने में आपकी मदद करेगे । शोभा सोनी ने भी बालको के अधिकारों की चर्चा की। चाइल्ड लाइन 1098 के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार ने बताया कि जो भी उचित समस्या है वह टीम के माध्यम से नियमानुसार जल्द ही उनका निराकरण के लिए जिला प्रशासन को अवगत करवाने का प्रयास किया जाएगा। कार्यक्रम में काउंसलर तबसुक अली एवं समस्त जेल के स्टाफ साथियों ने सहयोग किया। कार्यक्रम के अंत में टीम के बासुडा कटारा ने समस्त सुधार ग्रह के भाइयों एवं जेल ग्रह के समस्त कर्मचारी अधिकारी गणों का आभार व्यक्त किया एवं बताया कि आपने जिस तरह से हमें सुना एवं हमें जो सहयोग दिया उसके लिए ह्रदय से हम आपके आभारी हैं एवं जब फिर हमारी मुलाकात होगी तो भामाशाह के माध्यम से जो भी जेल में आवश्यक वस्तुओ की आवश्यकता हैं उनको आप तक पहुंचाने की व्यवस्था करवाने की भी बात कही गई ।

जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

माही

राम - राम

सभी साथियों को मेरा नमस्कार, उम्मीद है आप सभी स्वस्थ एवं सुरक्षित होंगे| हम सभी जानते है कि मार्च माह से पलायन का दौर शुरू होने वाला है| हमें आगे आकर सोचना होगा कि हम सभी मिलकर पलायन पर जाने वाले परिवारों को कैसे रोके| मार्च माह में कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों से संवाद हुआ| इस दौरान पलायन के मुद्दे पर गहन चर्चा के बाद निर्णय लिया गया कि हम अपनी-अपनी ग्राम पंचायतो में मनरेगा के अंतर्गत रोजगार के लिए अधिक से अधिक आवेदन करवाए, जंगल के आस-पास वाले क्षेत्रो में बीड़ी पत्ता, महुआ आदि को संगृहीत कर बाजार में बेचने का कार्य धरातल स्तर से शुरू कर सकते है|

सच्ची खेती-

मार्च माह में सक्षम समूह की बहनों के साथ संवाद किया| सवांद के दौरान महिला किसानों ने बताया कि हम सब ने मिलकर जिन महिला किसानों के पास सब्जियों के बीज नही है। 329 बहनों को पत्रिका लिखे जाने तक सात से आठ प्रकार का बीज प्रदान किया गया है| जो आने वाले तिन से चार माह में अपने घर पर ही सब्जियां उत्पादन करने के काम में लेगी| हम सभी मिलकर समुदाय को एक नया संदेश देंगे कि हमे कुछ अलग करना होगा| हम अपने खेतो पर हलमा के माध्यम से मेडबंदी करने जा रहे है जो अन्य गाँवो के लिए एक संदेश होगा की आज भी हमारा समुदाय परम्परागत परम्पराओं से आने वाली युवा पीढ़ी को अवगत करवा रहा है|

सच्चा बचपन-

पिछले माह कि मासिक बैठकों में बच्चो कि शिक्षा को लेकर चर्चा की गई ,चर्चा के दौरान निकलकर आया कि परीक्षा का समय चल रहा है| लेकिन फिर भी पलायन पर परिवार के परिवार अपने बच्चो को लेकर एक राज्य से दुसरे राज्य में चले जाते है जिसके कारण बच्चे परीक्षा से वंचित रह जाते हैं | परिवार के मुखिया अपने बच्चो के भविष्य को लेकर गंभीर नही होने से जीवन काफी प्रभावित होता है| बच्चो के सर्वांगीण विकास में चार अधिकार महत्वपूर्ण है– 1. जीवन जीने का अधिकार 2. सुरक्षा का अधिकार 3. सहभागिता का अधिकार 4. विकास का अधिकार, मिले हुए है| इन अधिकारों को हर व्यक्ति के व्यवहार में लाना बहुत जरूरी है |

सच्चा स्वराज-

जन जातिय समुदाय मे हलमा प्रथा वर्षो से चली आ रही है लेकिन नई पीढी हलमा के महत्व को समझ नहीं रही है । गांव के लोग कहने लगे है की इस परम्परा को जीवत रखना है, इसके लिए पुरे गांव मे किसी को भी जरूरत हो तो उसकी मदद की जाए ताकि युवाओ को इस परम्परा का महत्व समझ में आ सके | इसके लिए ऐसी ही मिशाल पेश कि है ग्राम पंचायत रुजिया में संस्था द्वारा गठित सक्षम समूह कि महिलाओ द्वारा गाँव मे हलमा परम्परा से सक्षम समूह कि महिलाओं ने गेहूं कटाई का काम 2 बीघा खेत मात्र 1.5 घंटे में कर दिया | अगर एक महिला खुद इसे करती तो पूरा सप्ताह इस कार्य मे लगता | आस -पास के गांवों मे अनूठा माहौल बना जिससे मार्च माह में संस्था के कार्य क्षेत्र के 118 गाँवों में 2327 महिला -पुरुषों ने मिलकर 369 बीघा गेहूं कि फसल कटाई कर एक दुसरे कि मदद करके हलमा परम्परा कि अनूठी मिसाल पेश की है | इस परम्परा से एक- दूसरे की मदद करते हुए समय और पैसे की बचत कर एक मिशाल पेश कि है |

मानगढ़

|| **सभी पाठकों को जयगुरु** ||

सच्ची खेतीः अधिकांश किसानों ने रबी फसलों की कटाई पूरी कर ली है तो कहीं-कहीं खेतों में फसल कटाई का काम लगभग अपने अंतिम चरण में है, कुछ वर्षो से यह देखने में आ रहा है कि थोड़ी सी मेहनत से बचने के लिए किसान, अपने खेत में आग लगाकर फसल अपशिष्ट जला रहे है जो कि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के साथ ही आगामी फसलों के लिए भी बहुत ही हानिकारक है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व कई स्थानों पर हल्की बारिश भी हुई है इसका लाभ लेते हुए हमें अपने खेतों में मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए। गहरी जुताई के कई लाभ होते है। पहला लाभ यह मिलता है कि फसल के अवशेष मिट्टी में दब जाते है और सड़ने के बाद खाद का काम करते है।

दूसरा लाभ यह होता है कि फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े तथा उनके अंडे तेज धुप के कारण ख़त्म हो जाते है।

तीसरा लाभ, वर्षाऋतू में बरसात होने पर पानी सीधा जमीन में जाता है जिससे खेत में नमी कई दिनों तक बनी रहती है और फसलो की पैदावार भी अच्छी होती है। इसलिए हम सभी को पराली जलाने से बचना चाहिए।

अप्रैल माह में ही आखातीज का त्यौहार आ रहा है| हमारे पूर्वज आखातीज से ही आगामी खरीफ सीजन की तैयारियां प्रारंभ कर देते थे। हमे भी अपने पूर्वजो के दिखाए राह पर चलते हुए खेत के समतलीकरण,मेडबंदी , खेत-तलाई निर्माण, रबी फसलो के लिए बीजो का संग्रहण, खेती के साथ फलदार और वानिकी पौधो के लिए गड्ढे तैयार करने का कार्य प्रारंभ कर देना चाहिए। इस कार्य में हम पंचायत में जाकर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत खेत सुधार का काम करवा सकते है जिससे गाँव में ही काम मिल जायेगा और गाँव के खेत भी सुधर जायेंगे।

सच्चा बचपनः ग्रामीण परिक्षेत्र में विवाह समारोह की धूम मची हुई है जिसमें बिना रोकटोक के रात भर तेज आवाज में डीजे साउंड चलाया जा रहा है, इससे बच्चों की पढाई से ध्यान भटक रहा है| कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन आनंदपुरी के अध्यक्ष श्री धनपाल आयड तथा उपाध्यक्ष श्री मोहनलाल मकवाना ,सदस्य शंकरलाल निनामा के द्वारा अपने-अपने गाँवो में परीक्षा की स्थिति को देखते हुए डीजे बंद करवाया है| हमारी ज़िम्मेदारी भी बनती है कि हम अपने समुदाय को परंपरागत वाद्ययंत्रों के उपयोग के लिए प्रेरित करे और असामाजिक तत्वों पर प्रशासन का सहयोग लेकर कार्यवाही सुनिश्चित कराये।

सहजकर्ता साथियों के द्वारा विद्यालयों में विविध खेल एवं रचनात्मक गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। साथ ही ग्राम स्वराज समूह की बैठकों में बाल सुलभ गाँव बनाने की कार्ययोजना का पुनर्मूल्यांकन भी किया गया। इस माह संस्था के सहजकर्ताओं के द्वारा 88 बाल पंचायतों का आयोजन किया गया। जिसमें वार्षिक परीक्षा के लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करने और बाल अधिकारों तक सभी बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य किया गया।

आखातीज पर्व पर हर वर्ष बड़ी संख्या में बाल विवाह होते है जिसके कारण कई बच्चों का बचपन छीन जाता है। बाल विवाह पुरे देश और आदिवासी समाज के लिए कलंक है। सरकार ने भी बाल विवाह को रोकने के लिए कानून बनाये है। परन्तु यह कानून तब सार्थक होंगे जब समुदाय अपने-अपने गाँवो में जनजागरूकता अभियान चलाकर समाज में होने वाले बालविवाह को रोके। इसके लिए गाँव की आंगनबाडी कार्यकर्त्ता, सरपंच, विकास अधिकारी, पुलिस को सुचना देकर या 1098 पर फ़ोन करके अवगत करवा सकते है |

सच्चा स्वराजः इस माह स्वराज संगठनो की बैठकों में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी कानून चर्चा का मुख्य केंद्र रहा है| रबी की फसल कटाई पूरी होने के बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण गुजरात, राजस्थान के बड़े शहरो में रोजगार के लिए पलायन करते है, ऐसे ग्रामीण विशेषकर प्रवासी श्रमिको को गाँव में ही रोजगार मिले इसके लिए सभी संगठनो के सदस्यों ने विशेष कार्ययोजना बनाकर ग्राम पंचायतो तथा पंचायत स्तरीय समिति के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा कर आवाज उठाई है| ग्रामीणों के हित के लिए उठाई गई बातो का सुखद परिणाम भी प्राप्त हुआ है जिसमें सीसी सड़क निर्माण, नहर सफाई, खेत समतलीकरण आदि कार्य प्रारंभ होकर गाँव में ही काम मिलना प्रारंभ हुआ है, जो परिवार 100 दिन का रोजगार प्राप्त कर चुके है उनके जॉब कार्ड पर अतिरिक्त 25 कार्य दिवस का रोजगार भी प्रदान किया जाना प्रारम्भ हुआ है| यह सभी उदाहरण समुदाय में रोजगार गारंटी कानून के प्रति बढ़ती जनजागरूकता का ही परिणाम है| मार्च माह में हुई बेमौसम बरसात ने कुछ किसानों की फसल का नुकसान किया था ऐसे किसानों को समय पर मुआवजा मिले और कोई भी प्रभावित किसान मुआवजे से छुट नही जाये इस हेतु संगठन के सदस्य लगातार पटवारी एवं प्रशासन के साथ मिलकर फसल खराबा की रिपोर्ट तैयार करवाने का कार्य किया है, जिससे कि इन प्रभावित किसानों को फसल ख़राब होने का मुआवजा मिल सके |

हिरन

"वाग्धारा परिवार की ओर से सभी जन -समुदाय और संगठन साथियों को जय गुरु"

सच्चा स्वराजः- प्रिय पाठको हम सभी इस अंक में ताम्बेसरा कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के सदस्य पारसिंह सुरावत की एक अनोखी पहल के बारे में जानेगें क्योंकि पारसिंह जी के द्वारा समुदाय को जागरूक करने एवं कई वंचित परिवारों को जन कल्याणकारी योजनाओं से जोड़कर मिसाल पेश कि है इन्होंने बहुत अच्छा प्रयास किया हैं जिसमे ग्राम पंचायत पाली बड़ी में विशेष ग्राम सभा करवाने के लिए उच्च स्तर से आदेश पारित करवाया और फिर सभी को जागरूक कर रहे हैं ऐसे सेवाभावी, कर्मठ कार्यकर्ता को तहेदिल से सुभकामनाऐं| जो समुदाय के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं, इसी के साथ इस बार सभी संगठनों ने फसल खराबे के लिए मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी कुशलगढ़ को ज्ञापन देकर गिरदावरी की मांग की | हम सब जानते हैं कि समुदाय को सशक्त बनाने के लिए जनजातिय स्वराज संगठन बने हुए हैं | हिरन इकाई के 356 गाँवो कि ग्राम पंचायतो के साथ मिलकर सभी जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद कार्यक्रम किया गया जिसका उद्देश्य जनप्रतिनिधि,सरकार व संस्था ग्राम विकास योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन को लेकर एक समान समझ बनाना | इस माह बाजना ब्लॉक में 400 युवाओं का चयन किया गया और उनका प्रशिक्षण किया गया जो गाँवो के विकास एवं योजना निर्माण में भागीदारी करेंगे | इस माह लघु उधोग हेतु जिन युवाओं का चयन किया गया था उनको जरूरत के अनुसार सामग्री उपलब्ध करवाई गयी | जिससे युवा अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर आजीविका बढ़ाये |

सच्चाबचपन :- सच्चा बचपन के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो में ग्राम स्वराज समूह की मासिक बैठकों का आयोजन किया गया, जिनका उदेश्य ग्राम विकास योजना निर्माण एवं स्कूल से वंचित बच्चो की सूचि तेयार करके उन बच्चो को स्कूल में नामांकित करना , योजनाओं से वंचित बच्चो की सूचि तेयार करना व अनाथ बच्चो को पालनहार योजना से जोड़ना | बाल सभा जिसमे बच्चो को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल- खेल के माध्यम से बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास करना| बच्चो में नेतृत्व क्षमता का विकास करने पर चर्चा की |

कुपोषित और अतिकुपोषित बच्चो के परिवारों के साथ नियमित रूप से फ़ॉलोप लिया जा रहा हैं जिसमे बच्चो को उचित खान-पान और नियमित स्वाथ्य जाँच के बारे में बताया जा रहा हैं |

सच्ची खेतीः- इस माह बीज रख- रखाव एवं भंडारण के लिए किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया जा रहा हैं जिसमे इस माह हिरण इकाई में 50 किसान खेत पाठशालाओं का आयोजन किया जायेगा | जैविक खेती को ध्यान में रखते हुए सच्ची खेती के पांचो आयामो जिसमे जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज हेतु ग्राम विकास योजना में ग्राम पंचायतो में निजी व सार्वजनिक कार्यो के लिए दिए गये प्रस्तावों में से अपना खेत अपना काम योजना के तहत समतलीकरण और मेडबंदी से संबधित कार्यो के लिए आवेदन दिए जायेंगे | इसी के साथ जनजातीय समुदाय के 356 गाँवो में महिला किसानो का प्रत्येक गाँव में एक समूह बना हुआ हैं | उस समूह को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव स्तर पर स्थानीय बीज बैंक या बीज प्रबंधन प्रणाली को शुरु करना, जिससे गाँव के लोगो को बाजार से बीज नहीं लाना पड़े और एक दुसरे को आदान -प्रदान करे |

गांव में रहकर पांऐ रोजगार

प्रिय पाठको अप्रेल माह के अंक में वाते वाग्धारा नी के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा मनरेगा में एक आंख से अंधे तथा दूसरी आंख से भी कमजोर व्यक्तियों के लिए संभावित कार्य करने का अधिकार प्रदान किया है | हमारे समुदाय में इस प्रकार के व्यक्तियों को भी अपने ही गाँव में रहकर मनरेगा में काम पाने का हक है तो आइये जानते है किस तरह के कार्य मनरेगा में कर सकते है :-

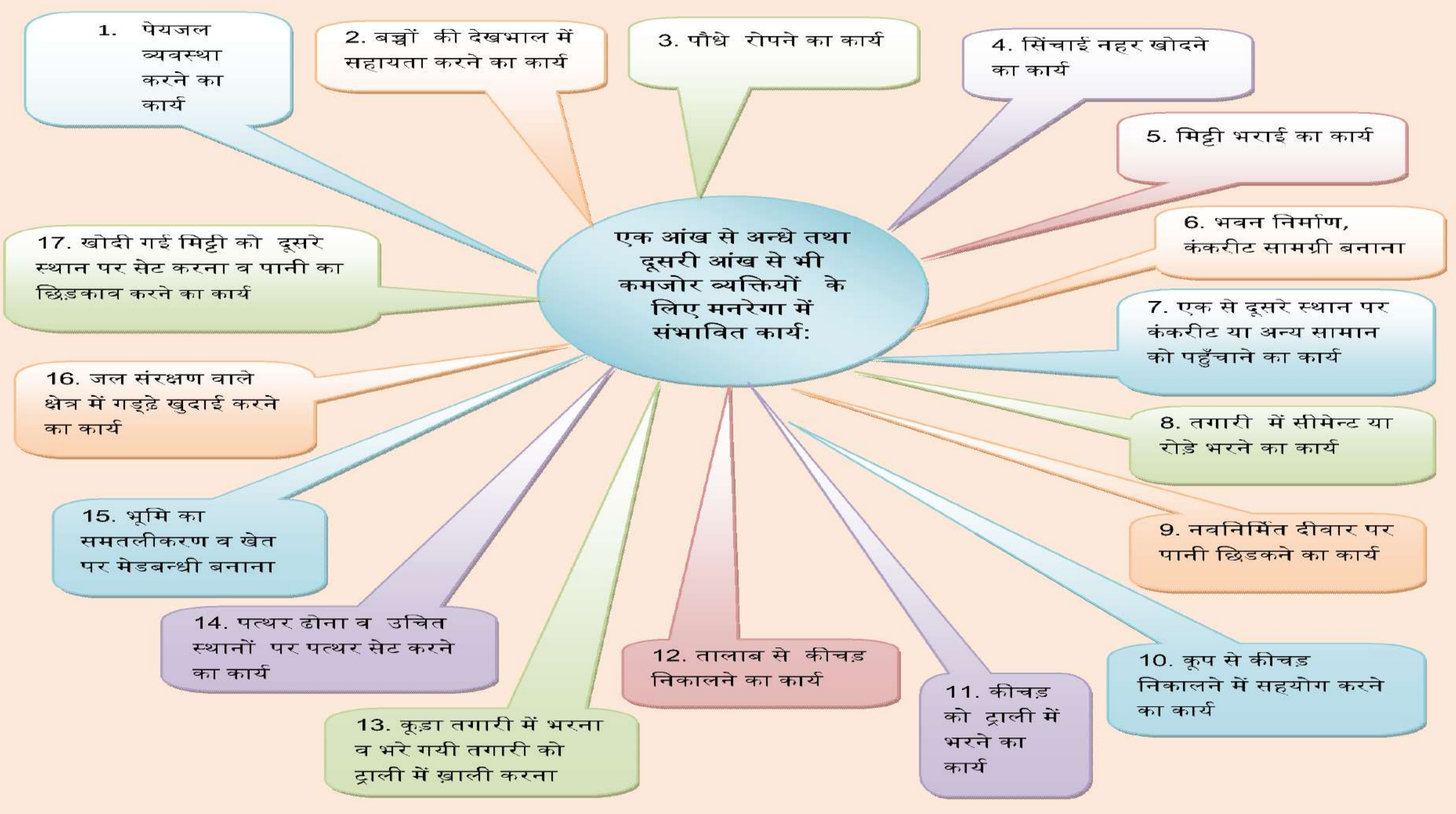

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |

अश्वगंधा एक सम्पूर्ण औषधीय पौधा

अश्वगंधा का परिचय

आपने कई बार अश्वगंधा का नाम सुना होगा। अखबारों या टीवी में अश्वगंधा के विज्ञापन आदि भी देखे होंगे। आप सोचते होंगे कि अश्वगंधा क्या है या अश्वगंधा के गुण क्या है ? दरअसल अश्वगंधा एक जड़ी-बूटी है। अश्वगंधा का प्रयोग कई रोगों में किया जाता है।अश्वगंधा के अनगिनत फायदों के अलावा अत्यधिक मात्रा में सेवन करने से अश्वगंधा के नुकसान से सेहत के लिए असुविधा उत्पन्न हो सकती है।

अश्वगंधा के कुछ खास औषधीय गुणों के कारण यह बहुत तेजी से प्रचलित हुआ है। आइए आपको बताते हैं आप अश्वगंधा का प्रयोग किन-किन बीमारियों में और कैसे कर सकते है |

अश्वगंधा क्या है?

अलग-अलग देशों में अश्वगंधा कई प्रकार की होती है, लेकिन असली अश्वगंधा की पहचान करने के लिए इसके पौधों को मसलने पर घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है। अश्वगंधा की ताजी जड़ में यह गंध अधिक तेज होती है। वन में पाए जाने वाले पौधों की तुलना में खेती के माध्यम से उगाए जाने वाले अश्वगंधा की गुणवत्ता अच्छी होती है। तेल निकालने के लिए वनों में पाया जाने वाला अश्वगंधा का पौधा ही अच्छा माना जाता है। इसके दो प्रकार हैं |

छोटी असगंध (अश्वगंधा):- इसकी झाड़ी छोटी होने से यह छोटी असगंध कहलाती है, लेकिन इसकी जड़ बड़ी होती है। राजस्थान के नागौर में यह बहुत अधिक पाई जाती है और वहां के जलवायु के प्रभाव से यह विशेष प्रभावशाली होती है। इसीलिए इसको नागौरी असगंध भी कहते हैं।

बड़ी या देशी असगंध (अश्वगंधा):- इसकी झाड़ी बड़ी होती है, लेकिन जड़ें छोटी और पतली होती हैं। यह बाग-बगीचों, खेतों और पहाड़ी स्थानों में सामान्य रूप में पाई जाती है। असगंध में कब्ज गुणों की प्रधानता होने से और उसकी गंध कुछ घोड़े के मूत्र जैसी होने से संस्कृत में इसकी बाजी या घोड़े से संबंधित नाम रखे गए हैं।

बाहरी आकृत :- बाजार में अश्वगंधा की दो प्रजातियां मिलती हैं |अश्वगंधा को लोग आम बोलचाल में असगंध के तौर पर जानते हैं |

अश्वगंधा कहां पाया या उगाया जाता है पूरे भारत में और खासकर सूखे प्रदेशों में अश्वगंधा के पौधे पाए जाते हैं। ये अपने आप उगते हैं। इसकी खेती भी की जाती है। ये अक्षर वनों में मिल जाते हैं।

अश्वगंधा के फायदे :- आयुर्वेद में अश्वगंधा का इस्तेमाल अश्वगंधा के पत्ते, अश्वगंधा चूर्ण के रुप में किया जाता है। अश्वगंधा के फायदे जितने अनगिनत हैं ,कई रोगों में आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी अश्वगंधा का औषधीय इस्तेमाल करना चाहिए |

- **सफेद बाल की समस्या में अश्वगंधा के फायदे** 2-4 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण का सेवन करने से समय से पहले बालों के सफेद होने की समस्या ठीक होती है।
- **आंखों की ज्योति बढ़ाए अश्वगंधा** 2 ग्राम अश्वगंधा, 2 ग्राम आंवला (धात्रीफल) और 1 ग्राम मुलेठी को आपस में मिलाकर, पीसकर अश्वगंधा चूर्ण कर लें। एक चम्मच अश्वगंधा चूर्ण को सुबह और शाम पानी के साथ सेवन करने से आंखों की रौशनी बढ़ती है।
- **गले के रोग (गलगंड) में अश्वगंधा के पत्ते के फायदे** अश्वगंधा गले के रोग में लाभकारी सिद्ध होता है।अश्वगंधा पाउडर तथा पुराने गुड़ को बराबार मात्रा में मिलाकर 1/2-1 ग्राम की वटी बना लें। इसे सुबह-सुबह बासी जल के साथ सेवन करें। अश्वगंधा के पत्ते का पेस्ट तैयार करें। इसका गण्ड माला पर लेप करें। इससे गलगंड में लाभ होता है।
- **टीबी रोग में अश्वगंधा चूर्ण के उपयोग** अश्वगंधा चूर्ण की 2 ग्राम मात्रा को असगंधा के ही 20 मिलीग्राम काढ़े के साथ सेवन करें। इससे टीबी में लाभ होता है। अश्वगंधा की जड़ से चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की 2 ग्राम लें और इसमें 1 ग्राम बड़ी पीपल का चूर्ण, 5 ग्राम घी और 5 ग्राम शहद मिला लें। इसका सेवन करने से टीबी (क्षय रोग) में लाभ होता है।
- **अश्वगंधा के इस्तेमाल से खांसी का इलाज** असगंधा की 10 ग्राम जड़ों को कूट लें। इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर 400 मिलीग्राम पानी में पकाएं। जब इसका आठवां हिस्सा रह जाए तो आंच बंद कर दें। इसे थोड़ा-थोड़ा पिलाने से कुकुर खांसी या वात से होने वाले कफ की समस्या में विशेष लाभ होता है। असगंधा के पत्तों से तैयार 40 मिलीग्राम गाढ़ा काढ़ा लें। इसमें 20 ग्राम बहेड़े का चूर्ण, 10 ग्राम कत्था चूर्ण, 5 ग्राम काली मिर्च तथा ढाई ग्राम सैंधा नमक मिला लें। इसकी 500 मिलीग्राम की गोलियां बना लें। इन गोलियों को चूसने से सब प्रकार की खांसी दूर होती है। टीबी के कारण से होने वाली खांसी में भी यह विशेष लाभदायक है।
- **छाती के दर्द में अश्वगंधा के लाभ** अश्वगंधा की जड़ का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा का जल के साथ सेवन करने से सीने के दर्द में लाभ होता है।
- पेट की बीमारी में अश्वगंधा चूर्ण के उपयोग पेट की बीमारी में आप अश्वगंधा चूर्ण का प्रयोग कर सकते हैं। अश्वगंधा चूर्ण में बराबर मात्रा में बहेड़ा चूर्ण मिला लें। इसे 2-4 ग्राम की मात्रा में गुड़ के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े खत्म होते हैं। अश्वगंधा चूर्ण में बराबर भाग में गिलोय का चूर्ण मिला लें। इसे 5-10 ग्राम शहद के साथ नियमित सेवन करने से पेट के कीड़ों का उपचार होता है।
- **अश्वगंधा चूर्ण के उपयोग से कब्ज की समस्या का इलाज** अश्वगंधा चूर्ण या अश्वगंधा पाउडर की 2 ग्राम मात्रा को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से कब्ज की परेशानी से छुटकारा मिलता है।
- **गर्भधारण करने में** अश्वगंधा का उपयोग करने से गर्भधारण संम्बंधित दोषों के निवारण हेतु कारगर औषधि है |
- **ल्यूकोरिया के इलाज में अश्वगंधा से फायदा** 2-4 ग्राम असगंधा की जड़ के चूर्ण में मिश्री मिला लें। इसे गाय के दूध के साथ सुबह और शाम सेवन करने से ल्यूकोरिया में लाभ होता है। अश्वगंधा, तिल, उड़द, गुड़ तथा घी को समान मात्रा में लें। इसे लड्डू बनाकर खिलाने से भी ल्यूकोरिया में फायदा होता है।
- **इंद्रिय दुर्बलतादूर करता है अश्वगंधा का प्रयोग**- अश्वगंधा के उपयोग से पुरुष इन्द्रयों में आई दुर्बलता को आसानी से दूर किया जा सकता है |
- **अश्वगंधा का गुम गठिया के इलाज के लिए फायदेमंद** 2 ग्राम अश्वगंधा पाउडर को सुबह और शाम गर्म दूध या पानी या फिर गाय के घी या शक्कर के साथ खाने से गठिया में फायदा होता है। इससे कमर दर्द और नींद न आने की समसया में भी लाभ होता है।असगंधा के 30 ग्राम ताजा पत्तों को, 250 मिलीग्राम पानी में उबाल लें। जब पानी आधा रह जाए तो छानकर पी लें। एक सप्ताह तक पीने से कफ से होने वाले वात तथा गठिया रोग में विशेष लाभ होता है। इसका लेप भी लाभदायक है।
- **चोट लगने पर करें अश्वगंधा का सेवन** अश्वगंधा पाउडर में गुड़ या घी मिला लें। इसे दूध के साथ सेवन करने से शस्त्र के चोट से होने वाले दर्द में आराम मिलता है।
- **अश्वगंधा के प्रयोग से त्वचा रोग का इलाज** अश्वगंधा के पत्तों का पेस्ट तैयार लें। इसका लेप या पत्तों के काढ़े से धोने से त्वचा में लगने वाले कीड़े ठीक होते है। इससे मधुमेह से होने वाले घाव तथा अन्य प्रकार के घावों का इलाज होता है। यह सूजन को दूर करने में लाभप्रद होता है। अश्वगंधा की जड़ को पीसकर, गुनगुना करके लेप करने से विसर्प रोग की समस्या में लाभ होता है।
- **अश्वगंधा के सेवन से दूर होती है शारीरिक कमजोरी** 2-4 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण को एक वर्ष तक बताई गई विधि से सेवन करने से शरीर रोग मुक्त तथा बलवान हो जाता है। 10-10 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण, तिल व घी लें। इसमें तीन ग्राम शहद मिलाकर जाड़े के दिनों में रोजाना 1-2 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से शरीर मजबूत बनता है। 6 ग्राम असगंधा चूर्ण में उतने ही भाग मिश्री और शहद मिला लें। इसमें 10 ग्राम गाय का घी मिलाएं। इस मिश्रण को 2-4 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम शीतकाल में 4 महीने तक सेवन करने से शरीर का पोषण होता है।
- **रक्त विकार में अश्वगंधा के चूर्ण से लाभ** :- अश्वगंधा पाउडर में बराबर मात्रा में चोप चीनी चूर्ण या चिरायता का चूर्ण मिला लें। इसे 3-5 ग्राम की मात्रा में सुबह और शाम सेवन करने से खून में होने वाली समस्याएं ठीक होती हैं।
- **बुखार उतारने के लिए करें अश्वगंधा का प्रयोग** 2 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण तथा 1 ग्राम लिय सत् (जूस) को मिला लें। इसे हर दिन शाम को गुनगुने पानी या शहद के साथ खाने से पुराना बुखार ठीक होता है।

भूरी देवी बनी दूसरों के लिए प्रेरणा

नाम :- भूरी देवी
पति का नाम :- पूंजी लाल
गाँव का नाम :- रघुनाथ जी का गढ़ा
उम्र :- 50 वर्ष
जमीन :- 3 बीघा
घर की स्थिति :- कच्चा मकान

बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर पहाड़ियों में बसा हुआ एक छोटा सा गांव जिसका नाम रघुनाथ जी का गड़ा है| इस गाँव में रहने वाली भूरी देवी की स्थिति एवं परिस्थितियों के बारे में देखते है कि कैसे भूरी पलायन छोड़ कर अपने परिवार का अच्छे से पालन-पोषण कर रही है|

पूर्व की स्थिति :- अगर हम भूरी देवी कि आज से 5 साल पहले की स्थिति के बारे में बात करे तो भूरी देवी और पूंजी लाल दोनों मध्यप्रदेश अपनी जीवनी चलाने के लिए पलायन करते थे| जहाँ वो दोनों स्लेट पेंसिल की फैक्ट्री में कार्यरत थे । स्तिथि यह थी की पहले पूंजीलाल ही पलायन करता था लेकिन जब परिवार बढ़ा और परिवार की जिम्मेदारी बढ़ी तो भूरी देवी ने भी साथ जाने का निश्चय किया साथ ही उनके 2 बच्चे भी उनके साथ जाते थे | करीब 10 साल तक अपने घर से बाहर रहकर मजदूरी का कार्य करते थे। इस बीच 2019 में कोरोना महामारी से दोनों की मजदूरी छिन गई। यह वक़्त उनके परिवार के लिए काफी मुश्किल था क्योंकि रोजगार नहीं था और घर पर भी कोई संसाधन नही था| मजदूरी के समय कुछ भी जमा पूंजी नहीं थी| ऐसा वक्त आ गया था की न हाथ में काम था,ना बच्चों का पालन –पोषण करने के लिए इतना पैसा की, घर पर बैठकर सब का पालन-पोषण कर सके । आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी | मजदूरी के पीछे बच्चों का पालन- पोषण किया करते थे, लेकिन जब से मजदूरी नहीं रही तो समस्या सामने आकर खड़ी हो गई। भूरी देवी और पूंजीलाल ने अपने गांव आकर काफी प्रयास किए, लेकिन किसी प्रकार की मजदूरी या पैसा आने का स्रोत नहीं मिला।

बदलाव के लिए प्रयास : इस बीच वाग्धारा संस्था सहजकर्ता गौरी गेंदोत और देवचंद कोरोनो महामारी के समय गांव में राहत कार्य करने हेतु रघुनाथ जी का गडा पहुचे और पलायन करने वाले परिवारों की जानकरी ली। इसी दौरान भूरी देवी से मुलाकात हुई| संस्था के कार्मिको ने भूरी देवी और पूंजीलाल को संस्था द्वारा संचालित सच्चा बचपन ,सच्ची खेती, सच्चा स्वराज के बारे में बताया। भूरी देवी ने खेती-बाड़ी को लेकर बातचीत की, घर पर रहकर खेती-बाड़ी के द्वारा अपना जीवन व्यापन किया जा सकता है।उसी दौरान भूरी देवी ने निश्चय किया कि वह आधा बीघा खेत में सब्जियों की खेती करेगीं, जिसे आमदनी होगी| घर परिवार का पालन पोषण अच्छे से कर सकेगे उस वक़्त भूरी देवी सक्षम समूह से जुडी और निरंतर बैठक में आने लगी वाग्धारा संस्था के दिशा निर्देश एवं कार्मिकों द्वारा बताई गई खेती की विधि को अपनाया। साथ ही समय-समय पर भूरी देवी संस्था के कार्मिक से बातचीत करती रही| संस्था द्वारा आयोजित बैठक एवं प्रशिक्षण में निरंतर रूचि पूर्वक भाग लेने लगी। भूरी देवी ने अपने आधा बीघा खेत में संस्था द्वारा दिया गया बीज बोया,पौधे तैयार हुए, उन्हें अपने खेत में लगाया और जैविक दवाई भी संस्था द्वारा बताई गई विधि से बनाई जिसे भूरी देवी को बाज़ार से कुछ भी नहीं लाना पड़ता | भूरी देवी ने खेत में लगाए गए टमाटर की देखभाल अच्छे से की साथ ही देशी खाद का उपयोग करते हुए पौधे तैयार किए। जब पौधे तैयार हुए तो भूरी देवी ने अपने आस-पास में सब्जियां बेचने लगी | जिससे आमदनी हुई और घर चलाया | कोरोना होने की वजह से यातायात की सुविधा नही थी तो शुरुआत में नुकसान भी हुआ क्योंकि गाँव में मुनाफा अधिक नही मिलता इसे वह दिन का 100-150 रुपये कमाती थी | परिवार के साथ रह कर वो दोनों काफी खुश थे। अब भूरी देवी के बच्चे अपनी पढाई भी पूरी कर चुके थे | इस अनुभव को देखते हुए पलायन न करने का निश्चय किया | अपने खेत में अलग-अलग प्रकार की सब्जियां लगाईं जिसमे टमाटर ,मिर्ची, बालोर, बैगन एवं मौसमी सब्जियाँ लगाई | स्थानीय बाजार में बेचने की पूरी योजना बनाई जिससे आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

आज की स्तिथि : भूरी देवी अपने खेत से टमाटर बेचकर दिन का 1200 से 1500 रूपए कमा रही है| महीने का कम से कम 45हजार रूपये की आमदनी है| वर्तमान स्तिथि में खेत की उपज घाटोल,बाँसवाडा बाजार तक पहुंच रही है| वर्तमान में टमाटर,मिर्ची की खेती है और आने वाले समय में भिंडी, गंवार,टिंडे करने की तैयारी है | भूरी देवी अपने दोनों लडको को भी खेती के हुनर सिखा रही है ताकि उन्हें उनके परिवार से दूर न जाना पड़े । गांव के लोगों के लिए भूरी देवी आज रोल मॉडल है। उनके परिवार को देखते हुए पूंजी लाल के 2 भाइयो ने भी खेती शुरू की, अब उनका परिवार भी सब्जियाँ बेच कर अपना जीवन यापन कर रहे है| भविष्य में भूरी देवी की अपेक्षा है संस्था नई-नई तकनीकी से सिख देती रहे ताकि और भी नए-नए आयामो तक पंहुचा जा सके । भूरी देवी अपनी सफलता का श्रेय वाग्धारा संस्था को देती है। भूरी देवी कहती है कि संस्था ने मेरे परिवार को ऐसा हुनर रूपी चिराग दिया है कि अब धरती माता भी श्रंगारित होती है और आर्थिक आधार सुकून प्रदान करता है |

SCAN ME

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org

यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार । मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार । संकलक सहयोगकर्ता : जागृती भट्ट ।